

## **पाठ 3: जीवन और मृत्यु**

**शास्त्र गीत: सदा आनन्दित रहो - 1 थिस्सलुनीकियों 5:16–18; फिलिप्पियों 4:6**

### **क. मसीह की महिमा करने की इच्छा**

1. रोम में अपनी कैद के दौरान प्रेरित पौलुस क्या होते हुए देखना चाहता था? फिलिप्पियों 1:19–20
2. मसीह का अनुयायी होने के नाते प्रेरित पौलुस पहले से कौन-सी अन्य कठिनाइयाँ और कष्ट सह चुका था? 2 कुरिन्थियों 11:23–27
3. रोम में पौलुस की कैद के दौरान किन-किन तरीकों से मसीह की महिमा हुई? फिलिप्पियों 1:12–13, 14; फिलेमोन 10 आदि
4. आज हमारे जीवन में—यहाँ तक कि परीक्षा और कठिनाई के समय में भी—किन-किन तरीकों से मसीह की महिमा हो सकती है?

### **ख. मृत्यु के भय से स्वतंत्रता**

1. फिलिप्पियों 1:21 जब प्रेरित पौलुस ने कहा, “मरना लाभ है,” तो उसका क्या अभिप्राय था?
2. शैतान मृत्यु को अपने सबसे बड़े हथियारों में से एक क्यों मानता है? यूहन्ना 8:44; इब्रानियों 2:14 आदि
3. यीशु की कौन-सी प्रतिज्ञाएँ हमें स्मरण कराती हैं कि हमें मृत्यु से डरने की आवश्यकता नहीं है? लूका 11:32; यूहन्ना 11:25; 6:39–40

### **ग. कूच करके मसीह के पास जाकर रहने की अभिलाषा**

1. फिलिप्पियों 1:22–24 प्रेरित पौलुस के लिए “कूच करके मसीह के पास जाकर रहने” का क्या अर्थ था?
2. थिस्सलुनीके के मसीहियों को दी गई पौलुस की प्रेरितिक शिक्षा हमें यह समझने में कैसे सहायता करती है कि मृत्यु के बाद क्या होता है? 1 थिस्सलुनीकियों 4:13–18
3. जो मसीही मृत्यु में सो जाता है, उसके लिए अगला सचेत विचार क्या होगा? यूहन्ना 11:11–14, 38–43; 6:28–29
4. मसीही के लिए कब्र में सोए रहने की अवधि क्यों महत्वहीन है?

### **घ. हर दिन मसीह के लिए जीना**

1. फिलिप्पियों 1:24–26 प्रेरित पौलुस के लिए “शरीर में बने रहना” क्यों आवश्यक था?
2. फिलिप्पियों 1:27 फिलिप्पी के मसीहियों से पौलुस का यह निवेदन आज हमारे जीवन से किस प्रकार संबंधित है?
3. “सुसमाचार के योग्य जीवन जीना” और ऐसा जीवन जीना जिससे हम उद्धार के योग्य बन सकें?—इन दोनों में क्या अंतर है?
4. प्रेरित पौलुस ने पहले से ही अपेक्षा की थी कि फिलिप्पी के विश्वासी सताव सहेंगे। (फिलिप्पियों 1:29) क्या यीशु के अनुयायियों के लिए सताव सहना अपरिहार्य है? 2 तीमुथियुस 3:12; मत्ती 5:10
5. जब हम सताव का अनुभव कर रहे हौं, तब भी हम प्रभु में आनन्द कैसे बनाए रख सकते हैं? लूका 6:22–23
6. यीशु के उन अनुयायियों से—जिन्होंने सताव का अनुभव किया (जैसे स्तिफनुस, पतरस, पौलुस आदि)—हम कौन-से पाठ सीख सकते हैं?